

संशितात्मा वि. (तत्.) दृढ़ निश्चयी, जिसने दृढ़ संकल्प कर लिया हो।

संशिति स्त्री. (तत्.) 1. शक, संदेह, संशय 2. सान में चढ़ाकर धार तेज करने की क्रिया या भाव।

संशीत वि. (तत्.) 1. ठंडा, शीतल किया हुआ 2. ठंड से जमा हुआ।

संशीलन पुं. (तत्.) 1. नियमित रूप से अभ्यास करने, अनुशीलन करने की क्रिया 2. संसर्ग, संपर्क बनाना।

संशुद्ध वि. (तत्.) 1. पूर्ण रूप से शुद्ध विशुद्ध 2. अच्छी तरह साफ किया हुआ 3. जांच किया हुआ, संवीक्षित, परीक्षित 4. ऋण चुकता किया हुआ 5. पाप, अपराध, दोष से युक्त 6. प्रायाश्चित करके पाप-मुक्त किया हुआ।

संशुद्धि स्त्री. (तत्.) संशुद्ध होने की क्रिया या भाव।

संशुष्क वि. (तत्.) 1. पूर्णतः शुष्क, सूखा 2. रसहीन, नीरस 3. जो विनोदी, प्रसन्नचित, रसिक न हो।

संशोधक वि. (तत्.) 1. संशोधन, सुधार करने वाला, त्रुटियां दूर करने वाला 2. संस्कार, परिमार्जन करने वाला 3. ऋण या देनदारी चुकाने वाला 4. किसी तथ्य, बात, वस्तु को सही या शुद्ध करने वाला, किसी विकार को ठीक करने वाला।

संशोधनीय वि. (तत्.) जिसका संशोधन किया जा सके, जिसका संशोधन किया जाना है, सुधार के योग्य।

संशोधित वि. (तत्.) 1. जिसे सुधारा, परिमार्जित किया गया हो 2. जिसे शुद्ध या दुरुस्त किया गया हो 3. जिस ऋण या देनदारी का भुगतान कर दिया गया हो।

संशोधी वि. (तत्.) संशोधन करने वाला, सुधार करने वाला, संशोधक, संशोधनकर्ता।

संशोध्य वि. (तत्.) 1. सुधार या संशोधन के योग्य 2. जिसका संशोधन किया जाना हो।

संशोभित वि. (तत्.) सुशोभित, शोभा या सौन्दर्य से युक्त, अलंकृत।

संशोषित वि. (तत्.) 1. सुखाया या सोखा हुआ 2. उपयोग में लाया हुआ।

संशोषी वि. (तत्.) सोखने वाला, सुखाने वाला।

संशोष्य वि. (तत्.) जो सोखा जा सकता हो या जिसे सोखा जाना हो, शोष्य।

संशोषण पुं. (तत्.) 1. सुखाना, शुष्क करना 2. अच्छी तरह से सोखना, आत्मसात करना 3. उचित रूप से उपयोग में लाना।

संश्रय पुं. (तत्.) 1. गठबंधन, संयोग, मेल 2. आश्रय, शरण, अवलम्ब, सहारा 3. आश्रय स्थल, शरणस्थल, घर, मकान 4. अंश, भाग 5. प्रयोजन, लक्ष्य, उद्देश्य 6. पारस्परिक सहायता के लिए राजाओं के बीच की जाने वाली संधि।

संश्रयण पुं. (तत्.) 1. शरण, सहारा लेना, पनाह लेना 2. संधि करना।

संश्रयणीय वि. (तत्.) 1. सहारे, शरण के योग्य, जिसका सहारा या अवलम्ब लिया जा सके 2. जिसे आश्रय, सहारा दिया जा सके।

संश्रयी वि. (तत्.) 1. आश्रय, शरण लेने वाला 2. सेवक, नौकर।

संश्रवण सं.पुं. (तत्.) 1. ध्यान से सुनना 2. स्वीकार करना 3. वचन देना, वायदा करना 4. सुनने से उत्पन्न ज्ञान।

संश्राव पुं. (तत्.) सुनना, संश्रवण।

संश्रावक वि. (तत्.) 1. श्रोता, सुनने वाला 2. शिष्य, चेला 3. सुनकर मान लेने वाला।

संश्रावित वि. (तत्.) 1. सुनाया हुआ, बताया हुआ 2. जोर से पढ़कर सुनाया हुआ।

संश्राव्य वि. (तत्.) सुनने योग्य, आकर्षण्य, जो सुना या सुनाया जा सके।

संश्रित पुं. (तत्.) 1. संयुक्त, एक दूसरे से जुड़ा हुआ 2. संलग्न, साथ लगा हुआ 3. जो किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी दल या वर्ग